भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४०, अक्टूबर-२०२४

जीवन में दीपोत्सव

www.bhartiyaparampara.com

For Private Circulation Only

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४१, नवम्बर-२०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-हेमन्त

सोम		04 कार्तिक शु. तृतीया	11 कार्तिक शु. दशमी, कंस वध	18 मार्ग. कृ. तृतीया	25 मार्ग. कृ. दशमी
मंगल		05 कार्तिक शु. चतुर्थी	12 कार्तिक शु. एकादशी, देवशयनी एकादशी व्रत	19 मार्ग. कृ. चतुर्थी, गणाधिप संकष्टी चतुर्थी	26 मार्ग. कृ. एकादशी, उत्पन्ना एकादशी व्रत
बुध		06 कार्तिक शु. पंचमी, लाभ पंचमी	13 कार्तिक शु. द्वादशी, तुलसी विवाह	20 मार्ग. कृ. पंचमी	27 मार्ग. कृ. द्वादशी
गुरू		07 कार्तिक शु. षष्ठी, छठ पूजा, स्कन्द षष्ठी	14 कार्तिक शु. त्रयोदशी/ चतुर्दशी, बाल दिवस	21 मार्ग. कृ. षष्ठी	28 मार्ग. कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत
शुक्र	01 कार्तिक कृ. अमावस्या, दीपावली, लक्ष्मी व चौपडा पूजन	08 कार्तिक शु. सप्तमी	15 कार्तिक शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, देव दिवाली, गुरूनानक जयंती	22 मार्ग. कृ. सप्तमी, कालभैरव जयंती	29 मार्ग. कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्रि
शनि	02 कार्तिक शु. प्रतिपदा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	09 कार्तिक शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी	16 मार्ग. कृ. प्रतिपदा	23 मार्ग. कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी, कालाष्टमी	30 मार्ग. कृ. चतुर्दशी
रवि	03 कार्तिक शु. द्वितीया, भाई दूज, यम द्वितीया	10 कार्तिक शु. नवमी, अक्षय नवमी, सतयुग	17 मार्ग. कृ. द्वितीया	24 मार्ग. कृ. नवमी	

मार्ग - मार्गशीर्ष कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

नन्हा सा दीया

मैं नन्हा सा दीया हूँ
जलता रहूँगा द्वार पर,
आप अंधकार को दो चुनौती
मेरे ऐतबार पर।
साथ न देगा कभी
सूरज अँधेरी रात में,
चाँद भी जा बैठा है
आज अमावस के हाथ में।
फिर भी जगमगाएगा
घर-अँगना-चौबारा तेरा,
न मैं सूरज न चँद्रमा
मैं हूँ नन्हा दीप सितारा तेरा।
अँधेरों के सभी छल
आज हो बेकार जाएंगे,
दिवाली के दीयों से
घनेरे तम जंग हार जाएंगे।
अपनी लौ को प्रचंड कर के
अंधकार निगलता रहेगा,
आज सारी रात दीये का
यह संघर्ष चलता रहेगा।

- सोनल मंजूश्री ओमर जी,
राजकोट (गुजरात)

दीपावली पर्व प्रेम का

करें उजाला दीप जलाकर
तम को दूर भगाएं।
दीपावली है पर्व प्रेम का
मिलजुल इसे मनाएं।

झूठ - कपट को मन से त्यागें
समरसता दर्शाएं।
ऊँच - नीच का भेद भुलाकर
सबको गले लगाएं।

जहाँ न पहुँची किरण ज्योति की
हम प्रकाश पहुँचाएं।
कहीं न कोई रहे अशिक्षित
ज्ञान - ध्वजा फहराएं।

जगमग - जगमग हो घर - आँगन
बाल - वृद्ध मुस्काएं।
दें मंगलकामना - बधाई
गीत प्रगति के गाएं।

- गौरीशंकर वैश्य जी,
'विनम्र' आदिलनगर, विकासनगर
(लखनऊ)

आओ ! दीये जलाएं !

पूर्ण हुए संकल्पों का - मिलकर पर्व मनाएं !
आओ ! दीये जलाएं !

आगत का स्वागत कर – आज हम नव संकल्प लें ।
मानवता की सेवा का – एक नहीं , कई विकल्प लें ।

भूखा कोई रहे न अब - ऐसा देश बनाएं !
आओ ! दीये जलाएं !

बीत गया जो समय हमारा - उसकी सुधि में हम न खोएं ।
हर मुखड़े पर मुस्कान खिले - अंखियां अब न कोई रोएं ।

खुशियों के तोहफे दे - दु:ख को दूर भगाएं !
आओ ! दीये जलाएं !

कंठ किसी का हो न प्यासा - हो बदन पर अब न थिगड़ैल ।
आंखों-सी न टपके टप-टप - अब ग़रीब का कोई खपरैल ।

तम की कुटिया में जा - दीपोत्सव हम मनाएं !
आओ ! दीये जलाएं !

सम्बन्ध सम्बोधन बन रह न जाएं - उन्हें अपनत्व की थपकी दें ।
रिश्तों की सूखी दूबों को हम - स्नेहिल फुहार अबकी दें ।

प्रेम - लय में हम डुबोकर – गीतों की गंग बहाएं !
आओ ! दीये जलाएं !

- अशोक आनन जी, मक्सी, जिला - शाजापुर (म.प्र.)

दीपावली क्यों मनाते है?

भारत देश में त्योहारों का काफी महत्व है, खासकर हिंदू धर्म में कई तरह के त्यौहार मनाए जाते हैं। लेकिन दीपावली की रौनक ही अलग होती है। रोशनी से डूबे शहर और गांव बेहद आकर्षित लगते हैं। शास्त्रों में दीपावली मनाने के अलग-अलग कारणों के बारे में बताया गया है। जगत विदित है कि हम लोग दीपावली मनाने का कारण भगवान राम, लक्ष्मण और सीता माता के **14 वर्ष का वनवास समाप्त कर अयोध्या लौटने** व **समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी के प्रकट** होने को मानते हैं। क्योंकि यह हम बचपन से सुनते आये है लेकिन इनके अलावा शास्त्रों के अनुसार दीपावली का यह त्यौहार अलग अलग युगों की महत्वपूर्ण घटनाओं का भी साक्षी रहा है।

1. लक्ष्मी अवतरण -

कार्तिक मास की अमावस्या को **माता लक्ष्मी समुद्र मंथन द्वारा धरती पर प्रकट हुई थीं**। दीपा-वली के त्यौहार को मनाने का सबसे खास कारण यही है। इसलिए आज माँ लक्ष्मी की पूजा करी जाती है तथा माँ लक्ष्मी के स्वागत के लिए हर घर को सजाया संवारा जाता है ताकि माता का आगमन हो और माँ का आशीर्वाद मिले।

2. भगवान विष्णु द्वारा लक्ष्मी जी को रिहा कराना -

इस घटना का उल्लेख हमारे शास्त्रों में मिलता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु के पांचवें अवतार (वामन अवतार) ने माता लक्ष्मी को राजा बलि से रिहा करवाया था।

3. श्री राम जी के वनवास से अयोध्या लौटने पर -

रामायण के अनुसार इस दिन जब भगवान राम, सीताजी और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या वापिस लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्या को दीप जलाकर रौशन किया गया था।

4. नरकासुर वध -

देवकी नंदन श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध कर 16000 स्त्रियों को इसी दिन मुक्त करवाया था। इसी खुशी में दीपावली का त्यौहार दो दिन तक मनाया गया और इसे **"विजय पर्व"** के नाम से जाना गया।

5. पांडवों की वापसी -

महाभारत के अनुसार जब कौरव और पांडव के बीच होने वाले चौसर के खेल में पांडव हार गए, तो उन्हें 12 वर्ष का अज्ञात वास दिया गया था। **पांचों पांडव अपना 12 साल का वनवास समाप्त कर इसी दिन वापस लौटे थे।** उनके लौटने की खुशी में दीप जलाकर खुशी के साथ दीपावली मनाई गई थी।

6. जैन धर्म -

दीपावली का दिन जैन संप्रदाय के लोगों के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जैन धर्म इस पर्व को **भगवान महावीर जी के मोक्ष दिवस** के रूप में मनाता है। ऐसा माना जाता है कि कार्तिक मास की अमावस्या के दिन ही भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

7. सिक्खों की दिवाली -

सिख धर्म के लिए भी दीपावली बहुत महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन को **सिख धर्म के तीसरे गुरु अमरदास जी ने "लाल पत्र दिवस" के रूप में मनाया था** जिसमें सभी श्रद्धालु गुरु से आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। इसके अलावा सन् 1577 में अमृतसर के हरिमंदिर साहिब का शिलान्यास भी दीपावली के दिन ही किया गया था। **सन् 1619 में सिक्ख गुरु हरगोबिन्द जी को ग्वालियर के किले में 52 राजाओं के साथ मुक्त किया जाना भी इस दिन की प्रमुख ऐतिहासिक घटना रही है।** इसलिए इस पर्व को सिक्ख समाज बंदी छोड़ दिवस के रूप में भी मनाता हैं। इन राजाओं व हरगोबिंद सिंह जी को मुगल बादशाह जहांगीर ने नजरबंद किया हुआ था।

8. विक्रमादित्य का राजतिलक -

भारतवर्ष के महान **राजा विक्रमादित्य का राजतिलक** इस दिन हुआ था, जिससे दीपावली का महत्व और खुशियों दुगुनी हो गईं।

9. आर्य समाज -

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय संस्कृति के महान जननायक ने दीपावली के दिन अजमेर (राजस्थान) के निकट अवसान लिया और इसी दिन **आर्य समाज की स्थापना** की गई थी। इस कारण भी दीपावली का त्यौहार विशेष महत्व रखता है।

10. फसलों का त्यौहार –

खरीफ की फसल के समय ही ये त्यौहार आता है जो कि किसानों के लिए समृद्धि और खुशहाली का संकेत होता है। इसलिए दीपावली का त्यौहार किसान लोग भी बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।

11. हिंदू नव वर्ष का दिन –

दीपावली के साथ ही हिंदू व्यापारियों का नया साल शुरू हो जाता है, व्यवसायी अपने खातों की नई किताबें शुरू करते हैं।

12. आर्थिक दृष्टिकोण -

दीवाली का त्यौहार भारत में एक प्रमुख खरीदारी की अवधि का प्रतीक है। यह पर्व नए कपड़े, घर के सामान, उपहार, सोने के आभूषण, चांदी के बर्तन और अन्य बड़ी ख़रीददारी का समय होता है। इस त्यौहार पर खर्च और ख़रीद को शुभ माना जाता है क्योंकि माता लक्ष्मी को, धन, समृद्धि, और निवेश की देवी माना जाता है।

दीपावली का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। यह पर्व सामूहिक, पारिवारिक व व्यक्तिगत सब तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। हर प्रांत या क्षेत्र में दीपावली मनाने के कारण एवं तरीके अलग-अलग हैं पर सभी जगह यह पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। लोगों में दीपावली की बहुत उमंग होती है पूरे साल इंतजार करते है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ़ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बाँटते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनायी जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है।

आप सभी की भारतीय परंपरा टीम की तरफ से दीपावली के ढेरो बधाईया।
आपकी दीपावली मंगलमय हो, दीपावली पर्व को धूमधाम से मनाये साथ में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और पटाखों से जलने से स्वयं बचे और दूसरों की भी रक्षा करे।

अगर आप अपने

'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

दीपावली के अगले दिन, कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को अन्नकूट और गोवर्धन पूजा का त्यौहार मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह **पर्व द्वापर युग में आरंभ हुआ था, क्योंकि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत और गायों की पूजा के लिए पके हुए अन्न का भोग अर्पित किया था,** इसलिए इस दिन का नाम **"अन्नकूट"** पड़ा। इस कारण अन्नकूट पूजा में अन्न का विशेष महत्व है।

इस पर्व पर विशेष रूप से सब्जी और पूड़ी का प्रसाद बनाकर चढ़ाया जाता है। इस समय सर्दी का मौसम शुरू होता है, जिससे नई सब्जियाँ बाज़ार में उपलब्ध होती हैं। इन **सब्जियों को मिलाकर, मूंग दाल और चावल डालकर प्रसाद तैयार किया जाता है, जिसे गोवर्धन पूजा में अन्नकूट सब्जी के रूप में भगवान को भोग लगाया जाता है।**

गोवर्धन पूजा की एक और मान्यता है -

गोवर्धन पूजा से जुड़ी मान्यता के अनुसार, देवराज इंद्र को घमंड हो गया था, जिसे तोड़ने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने एक लीला रची। ब्रजवासी इंद्र की पूजा की तैयारी कर रहे थे, लेकिन श्रीकृष्ण ने सुझाव दिया कि गोवर्धन पर्वत की पूजा की जाए, क्योंकि वहीं उनकी गायें चरती थीं। इंद्र ने इसे अपमान समझकर मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी। तब श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर सभी ब्रजवासियों को शरण दी। सात दिनों तक लगातार बारिश के बाद, इंद्र को एहसास हुआ कि श्रीकृष्ण कोई साधारण मानव नहीं, बल्कि भगवान विष्णु के अवतार हैं। इंद्र ने श्रीकृष्ण से माफी मांगी, और इस पौराणिक घटना के बाद से ही गोवर्धन पूजा की परंपरा शुरू हुई। इस दिन **गाय-बैल को स्नान कराकर उन्हें सजाया जाता है, उनके गले में नई रस्सी डाली जाती है, और उन्हें गुड़ और चावल मिलाकर खिलाया जाता है।**

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व:

भगवान कृष्ण ने संदेश दिया कि देवताओं के साथ हमें प्रकृति का संरक्षण और आदर भी करना चाहिए। इस पर्व से हमें पर्यावरण और कृषि का सम्मान करने की शिक्षा मिलती है। गायों की पूजा, पशुधन और कृषि की महत्ता को दर्शाती है।

पंच दिवसीय त्यौहार दीपावली के पाँचवें दिन संपूर्ण भारतवर्ष में **"भाई दूज"** का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। **भैया दूज को "यम द्वितीया" भी कहा जाता है।** शास्त्रों के अनुसार भैयादूज अथवा यम द्वितीया को मृत्यु के देवता यमराज का पूजन किया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई का तिलक करके, उसकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। भाई दूज के दिन विवाहित स्त्रियां अपने भाइयों को घर बुलाती हैं और उन्हें अपने हाथों से बना खाना खिलाती हैं। इसके बदले भाई अपनी बहन को स्नेह युक्त उपहार प्रदान करते हैं। ब्रजमंडल में तो इस दिन बहनें भाई के साथ यमुना स्नान भी करती हैं, एवं भाई के कल्याण और वृद्धि की इच्छा से यमुना तट पर भाई-बहन का समवेत भोजन कल्याणकारी माना जाता है।

दीपोत्सव का समापन दिवस, कार्तिक शुक्ल द्वितीय, जिसे भैया दूज कहा जाता है। इस पर्व के संबंध में पौराणिक कथा इस प्रकार है.... **सूर्य देव की पत्नी संज्ञा से दो संतानें थीं- पुत्र यमराज तथा पुत्री यमुना। संज्ञा सूर्य का तेज सहन न कर पाने के कारण एक दिन अपनी छायामूर्ति का निर्माण कर उसे ही अपने पुत्र-पुत्री को सौंपकर वहां से चली गई। छाया को यम और यमुना से किसी प्रकार का लगाव न था, किंतु यम और यमुना में बहुत प्रेम था।**

यमुना अपने भाई यमराज के यहां प्रायः जाती और उनके सुख-दुख की बातें पूछा करती। यमुना यमराज को अपने घर पर आने के लिए कहती, किंतु व्यस्तता तथा दायित्व बोझ के कारण वे उसके घर न जा पाते थे।

एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीय को यमराज अपनी बहन यमुना के घर अचानक जा पहुंचे। बहन यमुना ने अपने सहोदर भाई को बड़ा आदर-सत्कार किया। विविध व्यंजन बनाकर उन्हें भोजन कराया तथा भाल पर तिलक लगाया। यमराज अपनी बहन से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने यमुना को विधिव भेंट समर्पित की। जब वे वहां से चलने लगे, तब उन्होंने यमुना से कोई भी मनोवांछित वर मांगने का अनुरोध किया। यमुना ने उनके आग्रह को देखकर कहा- **"भैया! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं**

तो यही वर दीजिए कि, आज के दिन प्रतिवर्ष आप मेरे यहां आया करेंगे और मेरा आतिथ्य स्वीकार किया करेंगे। और इसी प्रकार आज के दिन जो भाई अपनी बहन के घर जाकर उसका आतिथ्य स्वीकार करें तथा उसे भेंट दें, उसकी सब अभिलाषाएं आप पूर्ण किया करें एवं उसे आपका भय न हो।"

यमुना की प्रार्थना को यमराज ने स्वीकार कर लिया। तभी से बहन-भाई का यह त्यौहार मनाया जाने लगा।

वस्तुतः इस त्यौहार का मुख्य उद्देश्य है भाई-बहन के मध्य सौमनस्य और सद्भावना का पावन प्रवाह अनवरत प्रवाहित रखना तथा एक-दूसरे के प्रति निष्कपट प्रेम को प्रोत्साहित करना है। **भाई-बहन के स्नेह के प्रतीक भाई-दूज के इस पावन पर्व पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं! सभी भाई-बहनों के बीच यह अटूट स्नेह व विश्वास सदैव यूँ ही बना रहे।**

- **सोनल मंजूश्री ओमर जी, राजकोट (गुजरात)**

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

हिंदू ग्रंथों में लाभ को परिभाषित किया गया है -
"लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः
यशेम इंदेवरा श्याम हुरुदयम थौ जनार्दन"

लाभ पंचमी, जिसे सौभाग्य पंचमी या व्यापारी पंचमी भी कहा जाता है, दिवाली के त्योहारों की श्रृंखला में अंतिम पर्व माना जाता है। इस पर्व का विशेष महत्व गुजरात और महाराष्ट्र में है, जहाँ इसे व्यवसायी समुदाय के लोग बड़े उत्साह से मनाते हैं। **लाभ पंचमी का अर्थ है 'लाभ' अर्थात 'फायदा' और 'पंचमी' अर्थात पांचवीं तिथि**। यह पर्व कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है और इसे नए सिरे से व्यवसाय शुरू करने और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। व्यापारी वर्ग के लिए लाभ पंचमी का दिन अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन वे अपने व्यापार के नए बहीखाते खोलते हैं और नया आर्थिक वर्ष प्रारंभ करते हैं। दुकानदार - व्यापारी इस दिन लक्ष्मी पूजन करते हैं और अपने व्यापार में समृद्धि और उन्नति की कामना करते हैं। माना जाता है कि इस दिन की गई पूजा और व्यापारिक गतिविधियाँ पूरे वर्ष सफलता और समृद्धि लेकर आती हैं। विशेष रूप से व्यापारिक प्रतिष्ठान सजाए जाते हैं, और अपने बहीखातों की विधिवत पूजा की जाती है। इसके साथ ही घरों और दुकानों की सफाई और सजावट कर उन्हें रंगोली, फूलों और दीपों से सजाया जाता है। व्यापारियों के लिए यह दिन बहुत ही शुभ माना जाता है, इसलिए वे इस दिन कोई भी नया कार्य या सौदा शुरू करते हैं।

इस दिन माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की विशेष पूजा की जाती है, ताकि व्यापार में धन, वैभव और सफलता का आशीर्वाद मिले। **लाभ पंचमी न केवल व्यापारियों के लिए बल्कि उन सभी के लिए शुभ है जो नए कार्यों की शुरुआत करना चाहते हैं या जीवन में उन्नति की इच्छा रखते हैं।**

अंततः लाभ पंचमी एक ऐसा पर्व है जो समृद्धि, उन्नति और सफलता का प्रतीक है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि जीवन में नई शुरुआत और मेहनत से हम सभी को लाभ प्राप्त होता है, और धार्मिक अनुष्ठानों से हमें आंतरिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

मोबाइल पर सुनते-सुनते सो जाता हूँ अक्सर
ग़ज़लें यूँ भी उतर रही हैं अब तो मेरे भीतर

लाख किताबों से पढ़कर तुम सीख सकोगे जितना
एक शेर में उतना यूँ ही कह देता है शायर

नयी फूटती कोपल हित में कदली घात करे बिन
आने वाली पीढ़ी को फ़िर कैसे मिलते अवसर

तू कहता है..मैं जीता हूँ.. सारी अच्छी बातें
तेरे-मेरे जीवन में है बस इतना ही अंतर

बिन पेंदी के लोटे सारे उच्चासन हैं बैठे
और चाहते भोली जनता कर ले उनका आदर

उन्हें पता हैं, उनके मन में, मैल भरा है कितना
लेकिन बनकर सीधे सच्चे रखते तीखे तेवर

धैर्य धरो ओ सच्चे मानुष याद रखो तुम इतना
ये कलयुग है इसमें हाथी पर बैठेंगे बन्दर

- विनय जैन जी, 'आनन्द', पालोदा, बाँसवाड़ा (राजस्थान)

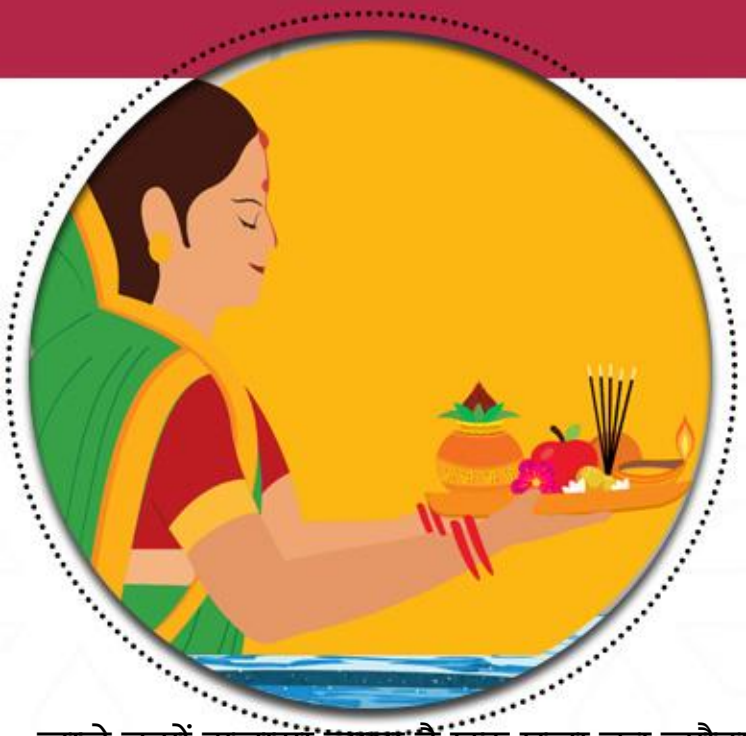

जाने क्यों मनायी जाता है छठ पूजा का त्यौहार?

छठ पूजा भारत का एक प्रमुख और प्राचीन त्यौहार है, जो मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। **यह त्यौहार सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित है। छठ पूजा विशेष रूप से सूर्य उपासना का पर्व है, जिसमें सूर्य देवता की पूजा उनके उदय और अस्त के समय की जाती है।**

छठ पूजा साल में दो बार होती है, एक चैत मास में और दूसरी कार्तिक मास में। यह कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से सप्तमी तिथि तक मनाई जाती है। **चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को 'चैती छठ' और कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले पर्व को 'कार्तिकी छठ' कहा जाता है। इस महापर्व को छठ पर्व, छठ या षष्ठी पूजा, छठी माई पूजा, डाला छठ और सूर्य षष्ठी पूजा भी कहते है।** छठ पूजा चार दिनों तक चलने वाला लोक पर्व है, जिसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होती है और समापन कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होता है: **नहाय खाय, लोहंडा या खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य के रूप में मनाते है।** छठ व्रत एक कठिन तपस्या की तरह होता है। व्रत करने वाली महिलाओं को **"परवैतिन"** कहते है। **चार दिनों के इस व्रत में पवित्र स्नान, उपवास, निर्जल रहना, लंबे समय तक पानी में खड़ा होना, प्रसाद (प्रार्थना प्रसाद) और अर्घ्य देना शामिल है।**

छठ पूजा का पौराणिक महत्व –

हिंदू शास्त्रों के अनुसार, **षष्ठी देवी को ब्रह्मा जी की मानस पुत्री कहा गया है।** उन्हें **मां दुर्गा के छठे रूप कात्यायनी देवी** (जिनकी पूजा नवरात्रि की षष्ठी तिथि पर होती है) का ही रूप माना जाता है। **छठ मइया को संतान देने वाली माता के नाम से भी जाना जाता है।** मान्यता है कि छठ व्रत रखने से नि:संतानों को संतान की प्राप्ति होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, **छठ पूजा की शुरुआत महाभारत काल में हुई थी।** कहा जाता है कि पांडवों की पत्नी द्रौपदी ने अपने परिवार के कल्याण और राज्य की समृद्धि के लिए इस व्रत को किया था। इसके अलावा, एक अन्य कथा के अनुसार **भगवान राम और माता सीता ने भी अपने वनवास के बाद इस व्रत को किया था।**

नमन करूं तुलसा महारानी नमन करूं
हरे हरे पात मंजरी सोहे
श्यामल भी है महारानी
है तरुवर की पटरानी.. नमन करूँ

जा घर तुलसा सदा विराजे
गृह पावन पवित्र हो जावे
पात तुम्हारे रोग विनाशक
भक्ति भाव दीजो महारानी.. नमन करूं

कार्तिक पावन महिमा गाऊँ
सांझ परे अल्पना सजाऊँ
नित नए नए भोग लगाऊँ
फिर भोजन मैं पाऊं.. नमन करूँ

ब्याह रचाओ गिरधर के संग
कृष्ण बिना आप ना मानी
धूप दीप नौवैद्य आरती
फूलन की बरसा हरषानी.. नमन करूँ

छप्पन भोग छतीसों व्यंजन
बिन तुम रे हरी भोग ना माने
तुलसी आप कौन तप कीनो
मिल गए हरि भगवान आपको.. नमन करूँ

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

किसी को वही देना कि, जब
वापस आए तो हंस के ले
सको. बात हो या व्यवहार.
क्योंकि, दुनिया गोल है...
और नियति तय है।

बीजी रहकर पता
चला कि
आधी समस्या तो
खाली रहने से थी।

यह मत सोचो
कि कब मिलेगा
सब्र रखो,
सब मिलेगा।

यदि डिग्री संस्कार
भुला दे,
तो अनपढ़ रहना ही
उचित है।

सहनशीलता हमारी शक्ति
का सर्वोच्च स्तर है...
और बदला लेने की
इच्छा हमारी कमजोरी
की प्रथम निशानी है।

मकान और इंसान,
टूट कर ही
नया बनता है।

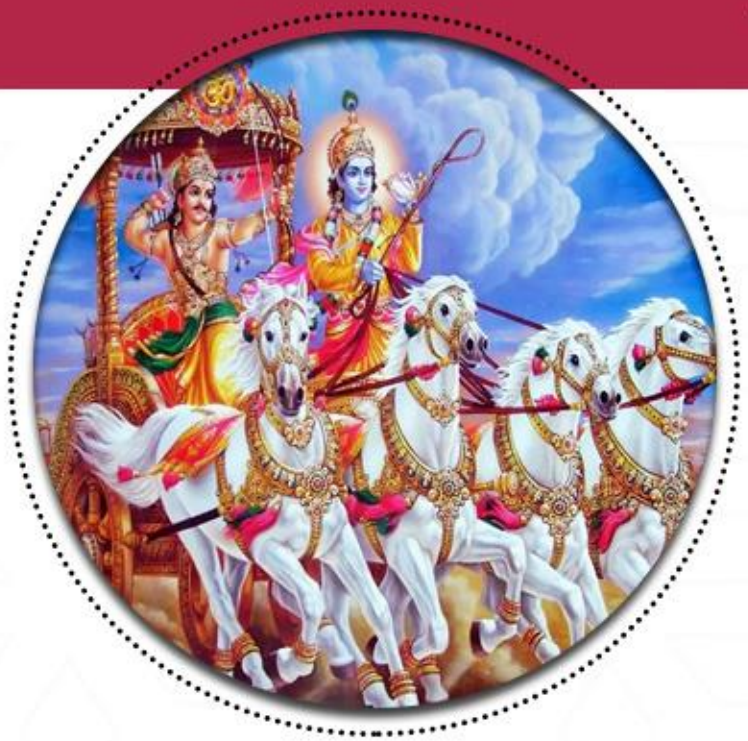

374. महाभारत की कथा किसने, किसको, कहां पर सुनायी...?

- परीक्षित पुत्र महाराज जनमेजय द्वारा संपन्न सर्पयज्ञ के दौरान महामुनि वेदव्यास जी की आज्ञा से वैशंपायन जी ने महाराज जनमेजय को महाभारत की कथा सुनाई। इस प्रकार मनुष्यलोक में महाभारत की कथा का वाचन पहली बार वैशंपायन जी द्वारा किया गया। सर्पयज्ञ में लोमहर्षण ऋषि के पुत्र उग्रश्रवा भी उपस्थित थे। नैमिषारण्य क्षेत्र में शौनक ऋषि के आश्रम में एक धर्मसभा के दौरान उपस्थित ऋषि-मुनियों को उग्रश्रवा द्वारा महाभारत की कथा सुनाई गई।

375. इस ग्रंथ का नाम महाभारत क्यों है...?

- **इस ग्रन्थ में भरतवंशियों के महान जन्म-कर्म का वर्णन है, इसलिये इसे महाभारत कहते है।** विषयवस्तु की महानता व बहुलता होने के कारण भी इसे महाभारत कहा जाता है।

376. कार्ष्ण वेद किसे कहते है...?

- महामुनि वेदव्यास का एक नाम श्रीकृष्णद्वैपायन भी है, अत: श्रीकृष्णद्वैपायन द्वारा रचित होने के कारण महाभारत को **'कार्ष्ण वेद'** भी कहा जाता है।

377. पंचम वेद किसे कहते है...?

- महाभारत में अठारह पुराणों, सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों और छहों अंगों सहित चारों वेदों का सार समाहित होने के कारण इसे **'पंचम वेद'** भी कहा जाता है। भगवान **वेदव्यास के पुत्र शुकदेव जी** कहते है कि नानाप्रकार के उपदेशमय रत्नों का भंडार होने के कारण यह पंचम वेद है।

378. संजय ने धृतराष्ट्र को युद्ध का हाल कैसे सुनाया...?

- संजय ने महल में धृतराष्ट्र के पास बैठकर, किसी तस्वीर या दीवार पर देखकर (वर्तमान दूरदर्शन की तरह) युद्ध का हाल नहीं सुनाया, जैसा कि अधिकतर जनों में मान्यता है। संजय को दिव्यदृष्टि प्राप्त थी, दूरदृष्टि नहीं । व्यास जी वरदान देते हुए कहते हैं कि संजय समस्त प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष घटनाओं को देख व जान सकेगा, भले ही दिन हो या रात। वह मन की गति से सर्वज्ञ आ-जा सकेगा। उसे कोई भी शस्त्र काट नहीं सकेगा और वह युद्ध से जीवित लौटेगा। स्पष्ट है कि संजय युद्ध के दौरान युद्धस्थल

पर थे, महल में नहीं। उन्होंने संपूर्ण युद्ध को देखा और वहां से लौटकर अपनी दिव्यदृष्टि के आधार पर, युद्धक्षेत्र में घटित घटनाएँ धृतराष्ट्र को बताईं। संजय पहली बार युद्ध से धृतराष्ट्र के पास तब लौटते हैं जब भीष्म अर्जुन के बाणों से घायल हो जाते हैं। अर्थात, जब संजय धृतराष्ट्र को युद्ध का हाल सुनाना प्रारंभ करते हैं, तब तक युद्ध दस दिन पुराना हो चुका था।

379. महाभारत की कथा प्रश्नोत्तरी रूप में क्यों...?

- अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा आज के समय की आवश्यकता और विवशता है, और त्रासदी भी कि वर्तमान पाठ्यक्रम में सनातन धर्म को कोई महत्व व स्थान प्राप्त नहीं है। ऐसे में माता-पिता/दादा-दादी की यह जिम्मेदारी हो जाती है कि वे युवा पीढ़ी को बाल्यावस्था से ही अपनी संस्कृति व धर्म से परिचय करवाएं।

प्रश्नोत्तरी किसी विषय को सरलता से समझने का एक प्रभावी माध्यम है, जिसमें अवकाश के पलों में, खेलकूद के दौरान या भोजन करते समय बच्चों के साथ प्रश्नोत्तर के रूप में संवाद किया जा सकता है। इस प्रकार तथ्यों को जानना व समझना आसान हो जाता है। इसी उद्देश्य से महाभारत पर कालक्रम के अनुसार प्रश्नावली तैयार की गई है। इसका उद्देश्य बालकों, युवापीढ़ी व सभी जिज्ञासुओं को महाभारत के पात्रों व घटनाक्रम से परिचय कराना है, ताकि इस अनमोल ग्रंथ को गहराई से जानने व समझने की उत्सुकता उत्पन्न हो।

380. निवेदन - प्रश्नोत्तर के रूप में जो कुछ लिखा गया है, वह महाभारत के नायकों, महानायकों, खलनायकों व घटनाक्रम का परिचय मात्र है, संपूर्ण महाभारत नहीं। महाभारत का असली दर्शन तो मूल आख्यान के साथ-साथ संदर्भित उपाख्यानों में समाया है। वेदव्यास जी ने अनेकानेक उपाख्यानों के माध्यम से ब्रह्म-जीव, लोक-परलोक, वेद-पुराण आदि विषयों के मूल तत्वों, रहस्यों व जगत के सनातन सत्य को समझाया है। लौकिक व पारलौकिक जीवन के प्रत्येक विषय को महाभारत में सहज व बोधगम्य भाव व भाषा में बताया गया है। कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता का पावन व कालजयी उपदेश नित्य श्रवणीय, पठनीय व अनुकरणीय है। यह प्रश्नावली तो एक रस्सी रूपी माध्यम मात्र है, बालकों व युवापीढ़ी को महाभारत रूपी अद्भुत ग्रंथ की ओर खींचने के लिए। आशा है कि प्रश्नावली के पठन के पश्चात सभी सुधी पाठकजन इस पंचम वेद का चिंतन-मनन के साथ मूलग्रंथ का अध्ययन अवश्य करेंगे।

381. सन्दर्भ - गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित **"संक्षिप्त महाभारत"**।

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

दिवाली पर बची हुई मिठाइयों की पेस्ट्री –

सामग्री: बची हुई मिठाई (काजू कतली और खोवे (मावे) की मिठाई), आधा लीटर दूध, दो टेबल स्पून कस्टर्ड पाउडर, काजू और बादाम की कतरन (स्वादानुसार), मिल्की टोस्ट, सूगर सिरप (गुलाब जामुन की चाशनी भी चलेंगी)

विधि: एक पैन में दूध गर्म होने रखें। थोड़े दूध में कस्टर्ड पाउडर मिलाएँ। जब दूध में उबाल आ जाए, तब उसमें बारीक किए हुए काजू कतली और मावे की मिठाई का चूरा मिलाकर अच्छे से घोटते रहें जब तक कि यह रबड़ी एकदम गाढ़ी न हो जाए। अब एक चौकोर ट्रे में मिल्क टोस्ट रखिए। इसके ऊपर चम्मच से सूगर सिरप डालिए। फिर ठंडी हुई रबड़ी डालकर चारों तरफ से अच्छे से कवर कर लीजिए। इसके ऊपर फिर से मिल्क टोस्ट रखकर उसके ऊपर सूगर सिरप डालकर चारों तरफ से रबड़ी से कवर कर लीजिए। सबसे ऊपर बादाम और काजू के कतरन से सजाकर इस मिठाई को चार-पांच घंटे के लिए सेट होने के लिए फ्रिज में रख दीजिए। आपकी बढ़िया टेस्टी पेस्ट्री बनकर तैयार हो गई।

बची हुई मिठाइयों का स्वीट सिजलर –

सामग्री: दिवाली की बची हुई मिठाइयाँ, एक कप दूध, भुने हुए बादाम और काजू की कतरन, कुछ टूटी-फ्रूटी (ऐच्छिक), सिजलर पैन, केले का पत्ता

विधि: एक गैस पर सिजलर पैन गर्म होने रखें। दूसरी गैस पर नॉन-स्टिक कढ़ाई में दूध गर्म होने रखें। काजू कतली अगर कड़क हो गई हो तो उसे किसनी से किस लें। खोये की मिठाई को हाथ से स्मैश कर लें। ये दोनों चीजें उबलते हुए दूध में डालकर एक समान हिलाते रहें जब तक कि वह गाढ़ी न हो जाए। आपकी रबड़ी तैयार है। पैन गर्म होने पर उसके अंदर केले का पत्ता रखकर उसके ऊपर जो भी मिठाइयाँ आपके पास हैं, वह रख दीजिए। ऊपर से गरमागरम रबड़ी डालकर स्वीट सिजलर पेश कीजिए।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

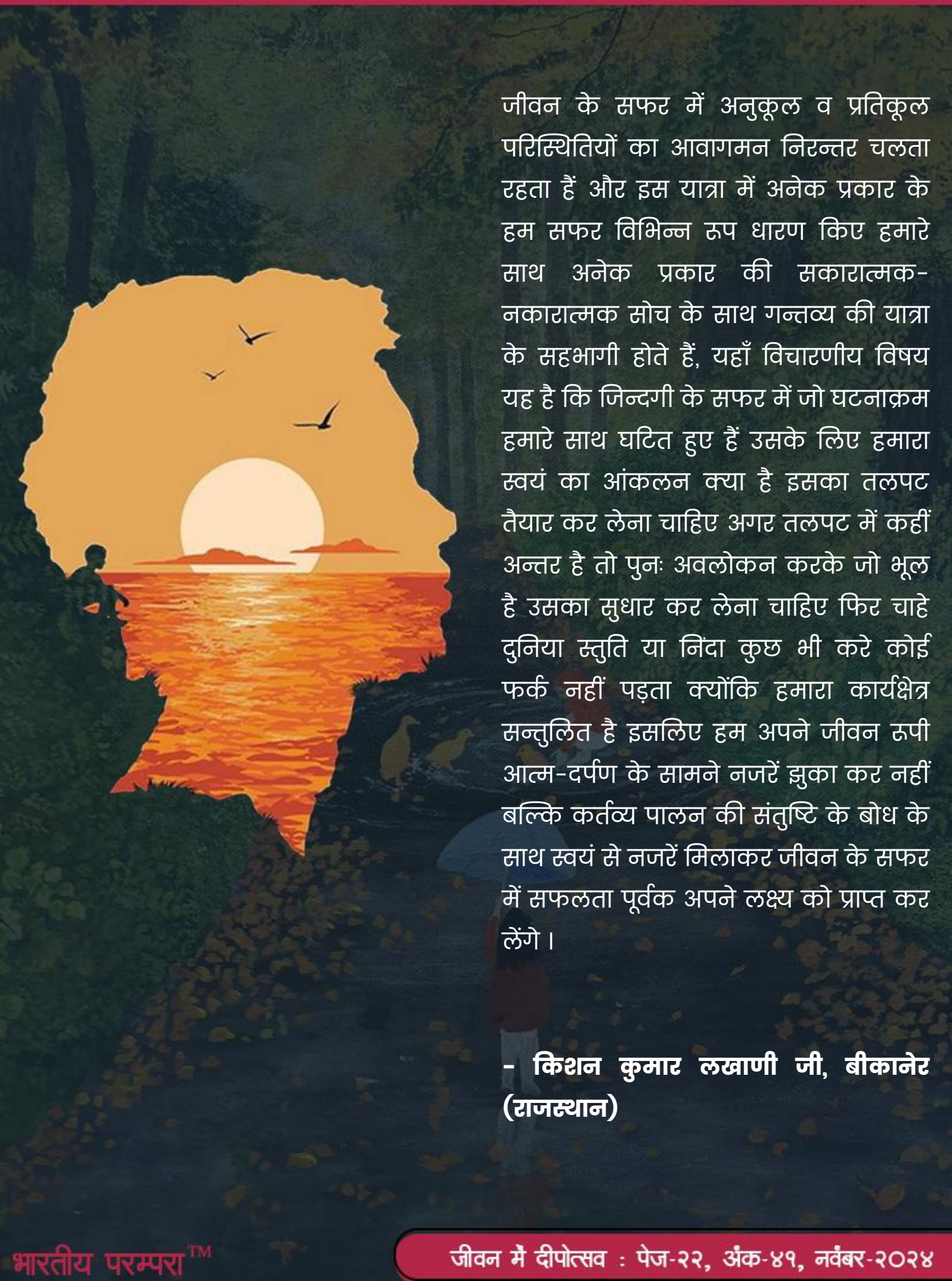

जीवन के सफर में अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों का आवागमन निरन्तर चलता रहता हैं और इस यात्रा में अनेक प्रकार के हम सफर विभिन्न रूप धारण किए हमारे साथ अनेक प्रकार की सकारात्मक-नकारात्मक सोच के साथ गन्तव्य की यात्रा के सहभागी होते हैं, यहाँ विचारणीय विषय यह है कि जिन्दगी के सफर में जो घटनाक्रम हमारे साथ घटित हुए हैं उसके लिए हमारा स्वयं का आंकलन क्या है इसका तलपट तैयार कर लेना चाहिए अगर तलपट में कहीं अन्तर है तो पुनः अवलोकन करके जो भूल है उसका सुधार कर लेना चाहिए फिर चाहे दुनिया स्तुति या निंदा कुछ भी करे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हमारा कार्यक्षेत्र सन्तुलित है इसलिए हम अपने जीवन रूपी आत्म-दर्पण के सामने नजरें झुका कर नहीं बल्कि कर्तव्य पालन की संतुष्टि के बोध के साथ स्वयं से नजरें मिलाकर जीवन के सफर में सफलता पूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

- किशन कुमार लखाणी जी, बीकानेर (राजस्थान)

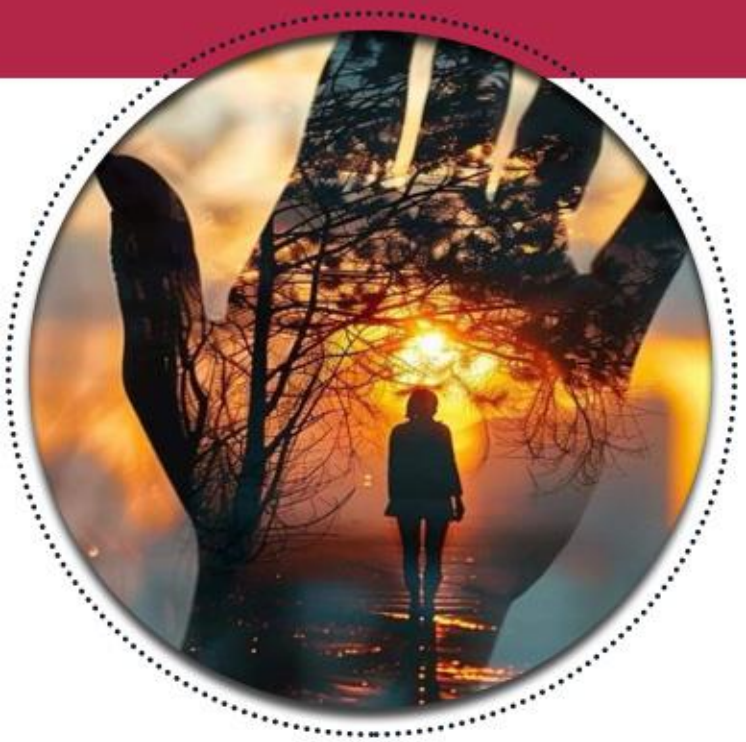

जब मन घोर निरीहता से जूझ रहा होता हो, उन क्षणों में भी परमात्मा की सुधि लिए बिना **हृदय को जरा सा भी चैन न आए यह प्रेम नहीं तो और क्या ही होगा?**

आज मैं न कोई स्वास्थ्य चर्चा पर बात करूंगा न किसी सामाजिकता पर आज मैं हृदयवादी होना चाहता हूं अपने मर्म की बात कहना चाहता हूं, अपने ईश का गुणगान करना चाहता हूं।

हां निस्संदेह मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैं बुद्ध नहीं बन सकता, पर मीरा बनने से किसने रोका है। इस यथार्थ वादी दौर में जब पुरुषों को उनके प्राकृतिक भाव से वंचित कर देने की होड़ मची हुई है उस क्षण में भी जो पुरुष रोना जानता है वही असली मानवीयता को जीवित रखे हुए है। इस दौर में जब लोग बी प्रैक्टिकल बी प्रैक्टिकल के नारे लगाते है और कहते रहते है कि प्रैक्टिकल बनो तो निश्चित ही वे चाहते हैं कि भावहीन बनो, और इसके पीछे कुछ विशेष सार्थक उद्देश्य भी नजर नहीं आता है, बस उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर में नए नए क्रेज को अपनाते हुए युवा इसे बड़ी उपलब्धि की तरह समझते हैं। पर मैं यह नहीं कहूंगा कि **"बी प्रैक्टिकल"।**

तुम बेशक यह नारे लगाओ मगर ध्यान रहे कि बी प्रैक्टिकल कहते कहते ऐसा न हो कि तुम्हारे अंतस का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। एक जीवित मनुष्य के भीतर निहित भाव ही उसका श्रृंगार होता है। विडंबना यह है कि कठोर होने के तर्क वही देते हैं जिसने सहजता के गुण को ठीक से जाना नहीं, और हम उन्हीं के बहकावे में आकर अपने जीवन में जहां फूल खिलने चाहिए वहां कांटो को आश्रय देने लगते है। हमें इस भ्रम में डाल दिया जाता है कि भावहीन होना मजबूती व बहादुरी का प्रतीक है। मगर दुखद है कि मनुष्यता उसी भ्रम में फंसती जा रही है।

यह ध्यान रहना चाहिए किउस क्षण तुम खुद को किसी निहायती क्रूर व्यापारी की तरह पाओगे, क्योंकि मर्म का सौदा दुनिया का सबसे अप्रत्याशित कृत्य है। और कठोर बनने के होड़ में यह इतनी जल्दी हो जाएगा कि हमें पता ही नहीं चलेगा, कि हम कब अपने भीतर के प्रेम करुणा, और आध्यात्मिकता के कुंए को भौतिकता और कठोरता की मिट्टी डालकर पाट चुके होंगे।

हम मनुष्यों को समझना चाहिए कि एक मूक पौधे भी हमारे भाव को समझते हैं, उनमें भी गुण होता है करुणा और क्रोध का बोध करने का। सत्य ही है न कि प्रेम से मारा गया थप्पड़ भी कोई स्नेहयुक्त स्पर्श लगता है जबकि क्रोध और घृणा से किया गया स्पर्श भी किसी थप्पड़ से कम नहीं होता। एक भावहीन मनुष्य ठीक किसी कब्र की भांति ही होता है, जिस पर न तो प्रेम के फूल चढ़ाए जा सकते हैं, और न ही अपनेपन का दीप जलाया जा सकता है।

अंततः मैं यही कहना चाहता हूं कि सुखद जीवन जीने के लिए बी प्रैक्टिकल जैसी भ्रामक परिस्थिति लाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, जहां हम भावशून्य हो जाएं। चूंकि हमारा शरीर तो पहले से ही भौतिक है, सारे विचार और क्रियाएं लगभग भौतिकता को ही केंद्र में लेकर घटित होती हैं। तो यह प्रैक्टिकल जीवन जीने के लिए अलग से हाथ पांव मारने की आवश्यकता थोड़ी है। यह तो स्वतः ही घटित होगा किसी व्यवहार की भांति, अंतस की ऊर्जा से।

- दीपक चौरसिया जी, "ईशदीप", बस्ती (उत्तर प्रदेश)

शादी वाले घर में
2 चीजें जो बार-बार
बनती रहती है..
रिश्तेदारों का मुंह
और चाय..!

टीचर- लड़कियां पराया धन
होती है तो लड़के क्या होते
है?? गप्पू- सर चोर होते है!
टीचर – वो कैसे?? गप्पू-
क्योकि चोरों की नजर
हमेशा पराये धन पर होती है।

मुझे लगता है
खुश रहने के लिए
पैसों से ज्यादा
खुराफाती होना
जरूरी है..!

बकवास
करते रहना चाहिए.....
मन
लगा रहता है.....!

दवाइयों के भी अलग
नखरे चलते हैं किसी
को पेट खाली चाहिए,
तो किसी को भरा..!

शरीर को इतना
मेन्टेन रखो कि
लोग तुम्हारी अर्थी
उठाते वक्त
गालियां न दें!

अपराध नियंत्रण के संदर्भ में संस्कार की प्रासंगिकता

अपराध एक विश्वव्यापी समस्या है। अपराध समाज को हानि पहुंचाने के साथ ही राष्ट्रीय छवि को भी धूमिल करता है। सनातन संस्कृति में संस्कार को केंद्र में रख कर अपराधों को नियंत्रित करने का लक्ष्य दिखाई देता है। मानवीय दोषों का परिहार करने के लिए संस्कारों का प्रावधान किया गया। मनोवृत्तियों का शोधन करना, सद्गुणों का बीजारोपण कर मनुष्य जीवन का यथोचित निर्माण करना संस्कार पद्धति से ही संभव है। संस्कारों की कमी को आपराधिक घटनाओं में बढ़ोतरी का प्रमुख कारण मानना कोई अत्युक्ति नहीं। **समाज के मानदंडों के विपरीत मार्ग -वैचारिक अथवा क्रियात्मक- पर चलना समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।** समाज के मानकों एवं मूल्यों की अवमानना असामाजिक गतिविधि-यों का कारण है। संस्कार पद्धति द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया में सकारात्मकता लाकर अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है।

विचलित करने वाले अपराधों का बढ़ना स्वस्थ समाज का लक्षण नहीं। ऐसे कृत्य सामाजिक/ राष्ट्रीय गति को भी बाधित करते हैं। **शिक्षा की कमी, निर्धनता जनित समस्याएं, भ्रष्टाचार में लिप्तता, नशा वृत्ति के कारण दिशाहीनता, नशा के लिए धन की आवश्यकता, कठोर कानून के अभाव में बेखौफ होना, रोजगार की कमी होना, द्वेष- विद्वेष में वृद्धि आदि अपराध के मूल में अवस्थित हैं।** संस्कारों की उपेक्षा के फलस्वरूप नैतिक स्तर का घटता हुआ ग्राफ इस दूषित वृत्ति को हवा दे रहा है।

ध्यातव्य है कि अपराधों का प्रभाव दूरगामी होता है। अपराध कालांतर में पश्चाताप का कारण बन सकता है, जीवनपर्यन्त मानसिक क्लेश दे सकता है। **आपराधिक गतिविधियों के कारण सामाजिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, रक्षण प्रणाली, कानून प्रणाली आदि में प्रयुक्त आर्थिक भार भी विकास को अवरुद्ध करता है।** इस प्रकार अपराध सामाजिक गुणवत्ता को दुष्प्रभावित करते हैं। यह एक गंभीर प्रकरण है। सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से इसके नियंत्रण के उपायों पर मंथन आवश्यक बन जाता है। अस्तु, अपराध के कारणों पर विचार करने से

संज्ञान में आता है कि व्यक्ति दोषपूर्ण मानसिकता के प्रभाव में सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता हुआ अपराध की ओर प्रवृत्त होता है। भौतिक लालसाओं को पूरा के लिए संपन्न युवाओं में भी अपराध वृत्ति देखी जा सकती है। परिवार की आपराधिक पृष्ठभूमि/ गलत संगति का प्रभाव/ जुआ की लत/ नशीली दवाओं का सेवन/ परिश्रम के बिना धनागम की अभिलाषा जैसे अनेक कारण उन्हें अपराध की ओर मोड़ रहे हैं। समृद्ध जनों की भी भ्रष्टाचार में संलिप्तता कोई अचंभे की बात नहीं। शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत किशोर भी क्रोध/ आवेश/ अहंकार के कारण अपराधों को अंजाम देते हुए देखे जा सकते हैं। यही नहीं, असामाजिक तत्वों के प्रभाव/ परिवार के नकारात्मक वातावरण/ आर्थिक दशा में प्रतिकूलता के कारण बाल जगत में भी समाज विरोधी कार्यों की परिणति कोई अपवाद नहीं। बाल अपराधों का फलना- फूलना एक संवेदनशील प्रकरण है। अपराध की भयावह परिणति से अनजान कम आयु के बच्चों की भी अपराध में संलिप्तता स्तब्धकारी है।

साइबर जगत में अपराध के मूल में दुर्भावना ही प्रतीत होती है। **महिला जगत में किए गए एसिड अटैक, यौन अपराध, अपहरण, लिव इन रिलेशनशिप में किए गए बलात्कार/ बर्बरता का कारण बेरोजगारी नहीं, अशिक्षा भी नहीं, कदाचित् संस्कारों की कमी ही है।**

शिक्षा में संस्कारों को प्राथमिकता न दिया जाना भी अपराध के पनपने का कारण है। इसमें कोई संशय नहीं कि संस्कारों की उपेक्षा से समाज विरोधी विचारों को प्रश्रय मिलता है। **वर्तमान में बच्चे- युवा हों अथवा वृद्ध, संस्कारों की क्षीणता दिखाई दे रही है। पारिवारिक द्वेष- विद्वेष, विवाद, हिंसा, बलात्कार, नशा आदि संस्कारहीनता के दुष्परिणाम हैं।**

जीवन में समस्याओं का आना अस्वाभाविक नहीं। संस्कारों के सुप्रभाव में संस्कारी व्यक्ति का रुझान अपराधों की ओर बढ़ने की बजाय समस्याओं का निदान ढूंढने में होता है। विशिष्ट तथ्य तो यह है संस्कार व्यक्ति को भय के कारण नहीं, प्रत्युत् नैतिक आधार पर शासनिक नीतियों के प्रति सचेत करते हैं, सामाजिक नियमों में विश्वास जगाते है।

व्यक्ति के विचार, क्रियाकलाप संस्कारों के अनुरूप होते हैं। संस्कार मनोभावों को सकारात्मक रूप से परिवर्तित करने वाली प्रणाली है। संस्कार मनोवैज्ञानिक स्तर पर अपराधों के प्रति निरोधात्मक कार्यवाही करते हैं। सामाजिक नियमों के साथ सामंजस्य बिठाने में अनुकूलता लाते हैं। जीवन मूल्यों के प्रति सजग कर सही दिशा में संचालित करते हैं। संस्कारों का उद्देश्य चारित्रिक गुणों का विकास

करना है। दुर्गुणों को निराकृत करना और सद्गुणों का समावेश करना है। **संस्कार पद्धति नैतिकता, संवेदना, सद्भाव, सहयोग, उदारता आदि उच्च भावों का समावेश करती है। संस्कार सदाचरण की पद्धति है जिसके माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होता है।**

अपराधी परिवार का ही एक सदस्य होता है। अतः अपराधों की रोकथाम में परिवार/ समाज की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। परिवार संस्था का यह दायित्व है कि नई पीढ़ी को संस्कारित कर अपराध वृत्ति से दूरी बनाने के लिए सक्रिय हो। इस ओर परिजनों के रचनात्मक सहयोग/स्नेह और स्वीकृति में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता होती है। परिवार द्वारा संस्कारित व्यक्ति के कदम गलत दिशा देखकर ठिठक जाते हैं। माता-पिता और शिक्षक के समवेत प्रयास व्यक्ति में उत्तम गुण सृजित कर संस्कारित करते हैं। किंतु यह एक सच्चाई है कि अपराध से जुड़े हुए माता- पिता अपनी संतान को इससे कदाचित् न तो दूर रख पाते हैं और न ही इसके दूरगामी दुष्प्रभावों से सावधान कर पाते हैं। वर्तमान में कठोर कानूनों के पश्चात भी अपराधों में भारी बढ़ोतरी हो रही है। उल्लेखनीय तथ्य है कि दंडात्मक प्रक्रिया अपराध को रोकने में सहायक तो है किंतु उस के उन्मूलन में कदाचित् संस्कार भी कम प्रभावी नहीं होते। संस्कारों में व्यक्ति को सन्मार्गगामी बनाकर आपराधिक गतिविधियों से बचाने का सामर्थ्य होता हैं। **सुधारात्मक विद्यालय, बाल गृहों, बाल क्लब, पालक गृह आदि में बाल अपराधियों की मनोवृति का संस्करण इस दिशा में आशान्वित कर सकता है।** मनोचिकित्सा द्वारा उनकी धारणाओं में सकारात्मक परिवर्तन की संभावनाएं दिखाई देती हैं।

संस्कार व्यक्ति को श्रेष्ठ दिशा में प्रवृत्त और गलत दिशा से निवृत्त कर आपराधिक वृत्ति पर अंकुश लगाते हैं। यही नहीं, संस्कार आपराधिक मनःस्थिति का शोधन कर सृजनशीलता की ओर गतिशील करते हैं। आचार पक्ष को संयमित बनाने, व्यवहार को संतुलित रखने, दिग्भ्रम के मध्य दिशादर्शन में संस्कारों की महती भूमिका है। इनका व्यक्ति के ऊपर गहरा प्रभाव देखा जाता है। संस्कार व्यक्ति को नैतिकता के प्रति प्रतिबद्ध बनाते हैं। संस्कार बाह्य- आभ्यंतर परिष्करण द्वारा सामाजिक बदलाव की योग्यता रखते हैं, सामाजिक मूल्यों के प्रति गंभीर बनाते हैं, मानवमात्र के प्रति संवेदनशील बनाते हैं, स्वच्छंदता/उच्छंखलता से विमुख करते हैं।

महिला- अपराध कम करने के लिए संस्कार सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह करते हैं। संस्कार व्यक्ति में बल- बुद्धि- विवेक उत्पन्न कर अपराध की ओर मुड़ने नहीं देते।

संस्कार सद्गुणों की श्रृंखला है। यथा- स्वाध्याय बुरे साहित्य से दूरी बनाकर अपराध की ओर बढ़ने वाली प्रवृत्ति के कारणों को ही निर्मूल करता है। **सौहार्द सामुदायिक सद्भावना को जगाता है।** सामाजिक अपेक्षाओं के अनुकूल आचरण नियमों के उल्लंघन से बचाता है। संयत जीवन, संतोषी प्रवृत्ति, दायित्वों का अवबोध, मानवीय मूल्यों का विकास, सही गलत की पहचान, नारी के प्रति उचित व्यवहार, सब संस्कारों से आते हैं। गलत तथ्यों को नकारने तथा श्रेष्ठ दिशा की ओर बढ़ने का बल संस्कार ही देते हैं।

वस्तुतः संस्कार सांस्कृतिक देन हैं जो आतंकवाद, धोखाधड़ी, गबन जैसे अपराधों को कम कर सामाजिक व्यवस्था में सहायक बन सकते हैं। यद्यपि अपराध नियंत्रण के लिए कानून व्यवस्था है, दंड विधान है तथापि अपराध वृत्ति में कमी लाने के लिए संस्कार पद्धति आशान्वित करती है। ध्यातव्य है कि माता-पिता की असमर्थता की दशा में शिक्षक वर्ग का विशेष दायित्व बन जाता है।

- **प्रो. कनक रानी जी, शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश)**

विनम्रता एक अद्भुत मानवीय गुण है। विनम्र होने का मतलब है स्वयं को समझना और स्वीकार करना जैसा कि आप वास्तव में हैं और दूसरों को वैसे ही स्वीकार करना जैसा कि वे वास्तव में हैं।विनम्रता आपके आंतरिक प्रेम की शक्ति से आती है।

अब प्रस्तुत कर रहा हूँ, उपरोक्त तथ्यों को चरितार्थ करते कुछ वाक्य जो हाल ही के वर्षों में देखने-सुनने में आये हैं -

1) जब क्रिकेटर राहुल द्रविड़ को बैंगलोर यूनिवर्सिटी ने **डॉक्टरेट की उपाधि** से सम्मानित किये जाने के बारे में पूछा था, तो **राहुल द्रविड़ ने विनम्रतापूर्वक इसे स्वीकार करने से इंकार कर दिया।** उस समय उन्होंने कहा था, "मेरी पत्नी एक डॉक्टर है। उसने इस डिग्री को पाने के लिए अनगिनत दिन, बिना सोए बिताए हैं। दूसरी तरफ मेरी माँ एक कला शिक्षिका हैं। उन्होंने अपनी डिग्री के लिए धैर्यपूर्वक पचास वर्षों तक प्रतीक्षा की। मैंने क्रिकेट खेलने के लिए बहुत मेहनत की, लेकिन मैंने उतनी पढ़ाई नहीं की, तो मैं यह उपाधि कैसे स्वीकार कर सकता हूँ ?"

2) 1952 में इज़रायली सरकार ने आईन्स्टाईन को प्रधानमन्त्री पद की पेशकश की। आईन्स्टाईन ने विनम्रतापूर्वक कहा, **"मैं भौतिकी का एक अनुभवहीन छात्र हूँ। मैं राज्य के शासन और प्रशासन के बारे में क्या समझता हूँ !!!"**

3) विश्व प्रसिद्ध रूसी गणितज्ञ ग्रिगोरी पेरेलमैन ने 2006 में फील्ड मेडल और गणित में नोबेल पुरस्कार के बराबर मानी जाने वाली एक बड़ी राशि लौटा दी थी। उन्होंने कहा, "हमारा बचपन गरीबी में बीता। माँ की कमाई को सुरक्षित रखने के लिए हमें बहुत गणितीय तरीके से प्रबन्धन करना पड़ा। शायद इसीलिए मैं कम उम्र से ही कुछ गणित कौशल विकसित करने में सक्षम हो गया। अब जब मैं गरीबी के उस दौर में नहीं हूँ, तो इतने पैसे का क्या करूंगा ?"

4) हाल ही में, टी-ट्वन्टी विश्वकप जीतनेवाली टीम का कोच होने के नाते राहुल द्रविड़ को भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने ₹ 5 करोड का बोनस देने की बात कही, जब कि बाकी सहयोगी कर्मचारी - वर्ग (सपोर्ट स्टाफ) को ₹ 2.50

करोड़ देने का तय हुआ था। यहां वापस द्रविड़ का बड़प्पन देखने को मिला जब उन्होंने यह ज्यादा राशि स्वीकारने को विनम्रतापूर्वक नकारा, यह कहकर की मैं भी एक सहयोगी स्टाफ हूँ और **यह ज्यादा राशि स्वीकारने का मैं अकेला हकदार नही हुँ!**

उपरोक्त घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि **"विनम्रता जब उभरती है, अहम लुप्त होता है... तब महान व्यक्तित्व उभरता है।"** और इसी सीख को बहुत पहले रहीम जी ने निम्न दोहा गढ़ व्यक्त किया था -

बड़े बड़ाई नहिं तजैं, लघु रहीम इतराइ ।
राइ करौंदा होत है, कटहर होत न राइ ॥

भावार्थ : जिन लोगो में विनम्रता और बड़प्पन होता है, वे धनी न होने के बाद भी दूसरों से मान-सम्मान पाते हैं। जबकि,गुणहीन लोग थोड़ा सा धन आने पर ही घमण्ड करने लगते है। जिस तरह राई का बीज करौंदा बन जाय तो वह इतराने लगता है,जबकि कटहल में यह भावना नहीं होती।

अन्त में सारांश यही निकलता है कि विनम्रता किसी को भी झुकने पर मजबूर कर देती है। याद रखें, जिस किसी ने यह लिखा है, सत्य लिखा है - **"विनम्रता की सीमा आकाश है और किसी भी स्तर पर, उसके नीचे गिरने की कोई सीमा नहीं है।"**

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राजस्थान)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solution at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमज़ोर और बीमार थी। रहती भी अकेले ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमज़ोर थी कि ख़ुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। **एक दिन बुढ़िया ने पास से गुज़रने वाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दे। भगवान तेरा भला करेगा।**

युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की उँगलियों में तो ख़ुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे।

युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर उँगलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। **बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे।**

बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही **उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी ग़ायब सा होता जा रहा है।**

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के दौरान युवक की उँगलियों पर भी कुछ मरहम लग गई थी। यह उस मरहम का ही प्रभाव था जिससे युवक की उँगलियों का दर्द ग़ायब होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनो हाथों की उँगलियाँ भी दर्द मुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं।

तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके ख़ुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती। **दूसरों की मदद करके हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु ही सुनिश्चित करते हैं।**

- सीताराम गुप्ता जी, दिल्ली

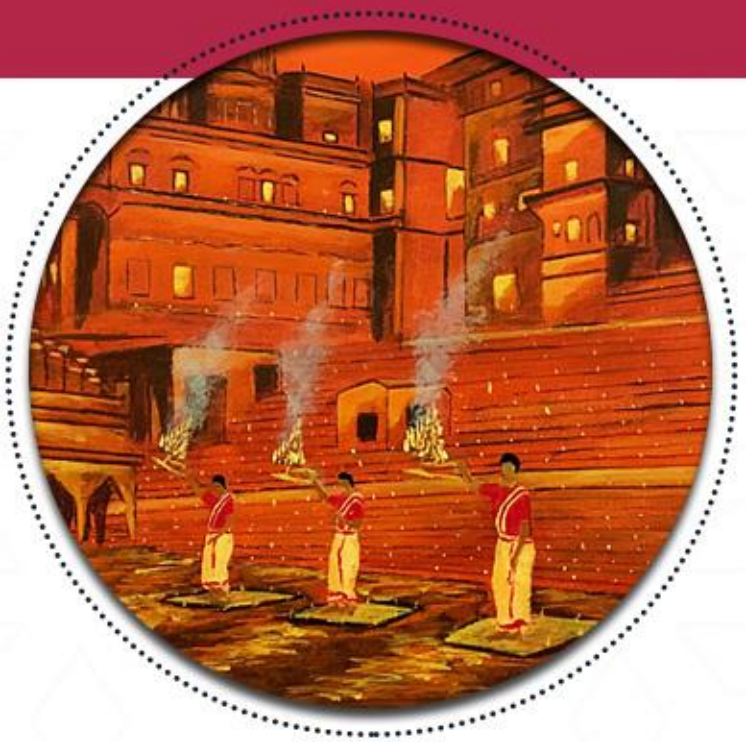

देव दिवाली, जिसे **"देव दीपावली"** के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण और पवित्र पर्व है। यह पर्व कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो दिवाली के 15 दिनों बाद आता है। यह त्यौहार विशेष रूप से उत्तर भारत, विशेषकर वाराणसी (बनारस और कशी पुराने नाम) में धूमधाम से मनाया जाता है। माना जाता है कि इस दिन देवतागण काशी में दिवाली मनाने आते है।

पौराणिक कथा –

देव दिवाली के पर्व को लेकर प्रमुख रूप से दो पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। **पहली कथा त्रिपुरासुर राक्षस से संबंधित है।** कहा जाता है कि **त्रिपुरासुर नाम का एक अत्यंत शक्तिशाली राक्षस था जिसने अपनी शक्तियों से तीन लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी, और पाताल) को त्रस्त कर दिया था।** देवता और मानव दोनों उसकी शक्तियों से परेशान थे, और तब उन्होंने भगवान शिव से सहायता की प्रार्थना की। भगवान शिव ने इस राक्षस को मारने के लिए **"त्रिपुरारी"** रूप धारण किया और कार्तिक पूर्णिमा के दिन त्रिपुरासुर का वध कर तीनों लोकों को उसके आतंक से मुक्त किया। इस **महान विजय के उपलक्ष्य में सभी देवताओं ने स्वर्ग में दिवाली मनाई, जिसे देव दिवाली के रूप में जाना जाता है।**

दूसरी कथा के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर राजा बलि को तीन पग भूमि में पाताल लोक भेजा था और पुनः देवताओं को स्वर्ग का राज्य वापस दिलाया था। इस कारण देवताओं ने इस दिन को उत्सव के रूप में मनाया।

धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व –

देव दिवाली का आध्यात्मिक महत्व अत्यधिक है। यह केवल देवताओं की जीत का पर्व नहीं है, बल्कि बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक भी है। इस दिन देवता स्वर्ग से आकर गंगा नदी में स्नान करते हैं और धरती पर उत्सव मनाते हैं। इसलिए, वाराणसी के घाटों पर यह त्यौहार विशेष रूप से मनाया जाता है। **गंगा नदी के किनारे लाखों दीप जलाए जाते हैं, जो एक दिव्य दृश्य प्रस्तुत करते हैं। माना जाता है कि इस दिन गंगा स्नान करने से और दीप जलाने से पुण्य की प्राप्ति होती है।**

देव दिवाली के उत्सव की परंपराएँ -

देव दिवाली के अवसर पर, भक्त घरों, मंदिरों और घाटों पर दीप जलाते हैं। वाराणसी के घाटों पर यह त्यौहार विशेष महत्व रखता है। गंगा आरती की विशेष पूजा की जाती है और दीपदान के माध्यम से भगवान शिव और अन्य देवताओं की आराधना की जाती है। इस दिन को श्रद्धालु विशेष रूप से गंगा स्नान, पूजा-पाठ और दान-पुण्य में व्यतीत करते हैं।

देव दिवाली हमें अच्छाई के मार्ग पर चलने और अपने जीवन को दिव्यता से भरने की प्रेरणा देती है।

बाल दिवस का आया है दिन, चाचा नेहरू से जिनकी पहचान।
बच्चों के थे सच्चे साथी, सपनों को देते थे नई उड़ान।

हंसते खेलते बचपन की याद, हर चेहरे पर प्यारी मुस्कान।
खुशियों से भर दें हर जीवन, यही हम सबके का अरमान।

बच्चों को पढ़ाई में लगे लगन, सिखाएं उनके नेक दिल बनना।
देश का भविष्य ये नन्हे फूल, इन्हें बताएं सपनों को बुनना।

हर बच्चा है प्यारा और खास, इनकी हंसी से रौशन है ये जहान।
बाल दिवस का दिन अनमोल, बचपन का करें हम सब सम्मान।

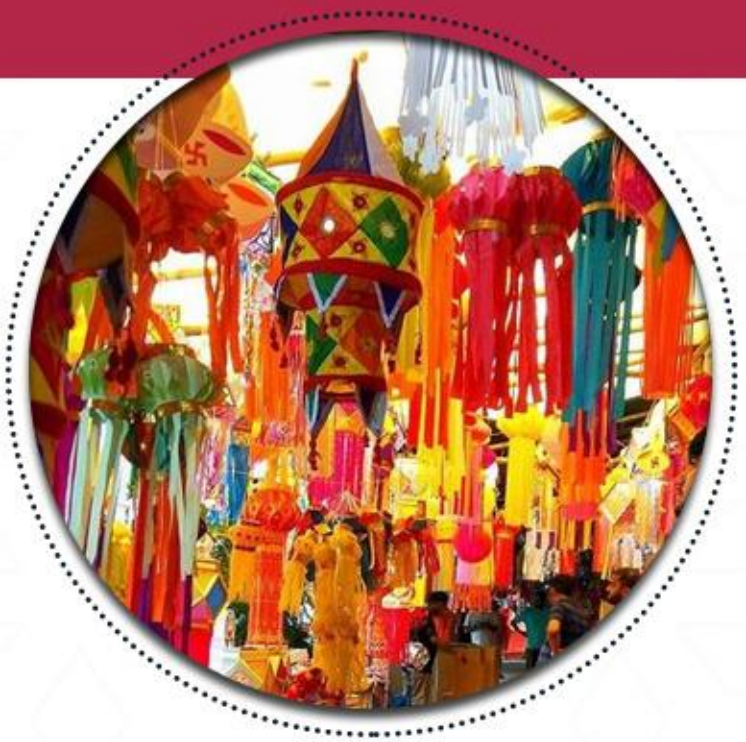

व्यापार और जीवन में नयी ऊर्जा भरता सनातनियों का दीपोत्सव

विविध त्यौहार, उत्सव, और मेले भारतीय संस्कृति की अन्यतम विशेषता है। अच्छी बात यह है कि हमारे सभी त्यौहार कहीं न कहीं संस्कार, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म से जुड़े हुए हैं, विज्ञान सम्मत है तथा आस्था और विश्वास की मजबूत नींव पर खड़े हैं। आज के व्यावसायिक जीवन में, अपनो के लिए समय न निकाल पाने वाले माहौल में इन त्यौहारों का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इनका प्रमुख उद्देश्य परिवार और समाज को एकजुट करते हुए मानव जीवन में हर्ष, उल्लास, उत्साह, जोश भरते रहना हैं। सभी त्यौहार जीवन में परिवार तथा आस-पड़ोस के महत्व को प्रतिपादित करते हैं तथा पारिवारिक सदस्यों, नाते-रिश्तेदारों, मित्र- मंडली तथा पड़ोसियों के मध्य संबंधों की डोर को मजबूत करते हैं तथा भाईचारा और समन्वय को स्थायित्व प्रदान करते हैं। इन त्यौहारों में दीपोत्सव का विशेष स्थान है क्योंकि यह त्यौहार देश की आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियों में बहुत तेजी लाता है, अर्थव्यवस्था को सशक्त करता है तथा आत्म-निर्भर भारत, स्वावलंबी भारत, वोकल फार लोकल भारत, स्वदेशी भारत (आंदोलन) के भाव को जगाता हुआ भारतीय निर्माताओं, विक्रेताओं तथा क्रेताओं के चेहरों पर मुस्कान का कारण बनता है। वास्तव में यह त्यौहार छोटे-बड़े व्यापारियों के लिए, छोटे-बड़े दुकानदारों के लिए पिछले वर्ष के नफे-नुकसान का आंकलन करते हुए कारोबार को नवीन ऊर्जा, नवीन सोच, नवीन विचार, नवीन तकनीक, के माध्यम से नवीन ऊंचाइयों पर पहुंचाने का एक सुनहरा अवसर भी है।

दीपोत्सव के दौरान अधिकांश भारतीय धन की देवी लक्ष्मी, विद्या की देवी सरस्वती तथा सद्बुद्धि के देवता श्रीगणेश की पूजा, अराधना करते हैं और समृद्धि की कामना करते हैं। **यह पूजन संकेत है कि मनुष्य जीवन में शिक्षा (पढ़ाई-लिखाई, संस्कार-सस्कृति, कौशल आदि), धन (रुपए- पैसा, संसाधन आदि), बुद्धि (विवेक आदि) के महत्व को समझे और सोच-विचार कर, सही-ग़लत, हित-अनहित में अंतर करते हुए आचरण करें।**

दीपोत्सव के एक माह पूर्व और एक माह बाद तक व्यापारिक गतिविधियों में तेजी देखी जा

सकती है। बाजार सजे-धजे रहते हैं और ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, फिर चाहे वह मॉल हो, या फिर बर्तन, वस्त्र, आभूषण, साज सज्जा, किराना, मिष्ठान-नमकीन-मेवे, गिफ्ट आइटम, पूजा सामग्री तथा भगवान के वस्त्र-आभूषण, आतिशबाजी आदि विविध वस्तुओं की दुकानें हों, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम, वाहन (दो पहिए से लेकर चार पहियों तक) के शोरूम हों या फिर फुटपाथ पर लगी छोटी-छोटी विविध वस्तुओं की दुकानें हों (दीयें , मोमबत्ती, झालर, फल, फूल- माला, धानी, आकर्षक फोटो, मूर्तियां, झाड़ू आदि) सभी की दीपावली के समय मांग और बिक्री बढ़ती है। थोक और फुटकर व्यापारियों द्वारा ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए नया स्टाक रखने, नवोन्मेषी उत्पाद लॉन्च करने, विशेष छूट देने आदि के लिए विशेष योजनाएं आरंभ करने का समय होता है। इसीलिए दीपावली से पहले का समय बाजार में प्रतिस्पर्धा का समय होता है, और हर व्यवसायी और दुकानदार विक्री को बढ़ाने के लिए ग्राहक हितेषी नवाचार तथा रचनात्मक रणनीतियाँ का सहारा लेता है।

उपभोक्ता भी नयी-नयी वस्तुओं के क्रय के लिए इस समय का इंतजार करता है, धन इकट्ठा करता है। बैंक आदि संस्थाएं जहां एक ओर कंज्यूमर्स लोन को आसान शर्तों पर उपलब्ध कराती है, वहीं सरकारी तथा प्राइवेट संस्थाएं अपने अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए बोनस देती है, डीए में बढ़ोतरी करती है तथा फेस्टिवल लोन की सुविधा उपलब्ध कराती हैं। सभी का एक ही उद्देश्य रहता है उत्पादन में बढ़ोतरी करना, इंसान की क्रय शक्ति को बढ़ाना, बाजार में मांग और आपूर्ति में तेजी लाना तथा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करना।

ऐसा देखा गया है कि इन अवसरों पर उपभोक्ता बड़े पैमाने पर, उत्साह और उमंग के साथ यथा क्षमता खरीदारी करते हैं और अपने घरों को साफ-सफाई, रंग-रोगन, लिपाई-पुताई, रोशनी तथा साज- सज्जा आदि से आकर्षक रूप प्रदान करते हैं। उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति भी दीपावली के दौरान अधिक देखी गई है।कई बार इसका कारण छूट और आकर्षक ऑफरों होते हैं तो कई बार बाजार का आकर्षण तथा उपभोक्ताओं की प्रवृत्ति के साथ यह विश्वास कि इस दौरान ली गई वस्तुएं मंगलकारी होती हैं। अच्छी बात यह है कि **इन अवसरों पर ग्राहकों की बढ़ी हुई क्रय शक्ति से बाजार में पैसे का प्रवाह अधिक होता है, जो देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाता है।** अतः हम विश्वास से कह सकते हैं **भारतीय सनातन संस्कृति में इस तरह के त्यौहार, निर्माताओं से लेकर सभी छोटे-बड़े व्यापारियों के लिए एक अवसर होता है, गुणवत्ता युक्त, देशज, स्थानीय उत्पादों की बिक्री के माध्यम से नए ग्राहकों को जोड़ने**

और पुराने ग्राहकों के साथ संबंधों को और मजबूती प्रदान करने का, स्वयं और देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक भूमिका निभाने का। क्रेताओं की भी जिम्मेदारी है कि वे फुटकर, फुटपाथ तथा स्थानीय लोगों की वस्तुओं, उत्पादों, कलाकृतियों को महत्व दें, उन्हें भी दीपोत्सव मनाने का अवसर प्रदान करें।आज के डिजिटल युग में, ऑनलाइन शॉपिंग का महत्व भी दीपावली के समय बढ़ जाता है। ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म जैसे अमेज़न, फ्लिपकार्ट, और अन्य ऑनलाइन विक्री के माध्यम इस समय विशेष छूट और ऑफरों के साथ ग्राहकों को आकर्षित कर अपनी पहुंच को विस्तार देते हैं।

वास्तव में यह समय निवेश और खपत का होता है, जिससे बाजार में मांग और आपूर्ति का संतुलन बना रहता है। छोटे व्यापारी और कारीगरों के लिए यह समय विशेष रूप से लाभकारी होता है, क्योंकि वे अपने उत्पादों को बड़े पैमाने पर बेचने का अवसर पाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन और बिक्री बढ़ने से रोजगार/आमदनी के अवसर भी बढ़ते हैं, जिससे समाज के आर्थिक ढांचे में भी सुधार होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि **दीपोत्सव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यापारिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण पर्व है।** यह त्यौहार व्यापार जगत में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करता है, गतिशीलता लाता है,नई संभावनाओं को जन्म देता है और अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।

इस दौरान भारतीय लोगों का विशेषकर सनातनियों के व्यवहार में भी बदलाव देखा जाता है, जहां एक ओर अधिकांश लोगों का पूजा-पाठ, दान-पुण्य की ओर झुकाव बढ़ता है और दीन, दु:खी, गरीब, मजबूर, अनाथ आदि लोगों के प्रति समर्पण दिखाई देता है, कर्त्तव्य बोध का एहसास होता है और सहायता करने की इच्छा जागृत होती है। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग इस अवसर का लाभ उठा कर धोखाधड़ी, चोरीचकारी, लूटपाट , छेड़छाड़ करने से बाज नहीं आते हैं, मिलावट का सहारा लेते हैं, टोने-टोटके और अंधविश्वास को बढ़ावा देते हैं। सम्पन्न लोगों का गरीबों की सहायता करना, उनके साथ दीपावली मनाना तो एक अच्छा बदलाव कहा जा सकता है, क्योंकि यह कृत्य अपराध और अपराधिक प्रवृत्तियों को कम करने में मदद करता है। किन्तु **लोगों का धोखाधड़ी, जालसाजी, लूटपाट, मिलावट, अंधविश्वास आदि में लिप्त होना कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस पर रोक लगना ही चाहिए।** इस समय बाजारों में ग्राहकों की भीड़ बढ़ जाती है। यातायात की सुगम रूप से व्यवस्था करना कठिन होता है।

इस समस्या के लिए जिम्मेदार है दुकानदार और ग्राहक और समाधान भी इनके पास है। दुकानदार मदद कर सकता है अपनी दुकानों तक सीमित रहते हुए, आवागमन के मार्ग को अवरुद्ध न करके और ग्राहक मदद कर सकते हैं अपने वाहनों को निर्धारित स्थानों पर पार्क करके या पब्लिक यातायात व्यवस्था का उपयोग कर के ।

दीपोत्सव का संबंध कहीं न कहीं साफ- सफाई से भी है जो स्वस्थ रहने के लिए अपने आसपास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने की सीख देता तथा बुराइयों से दूर रहने के लिए मन, शरीर और आचरण की पवित्रता और शुद्धि पर बल देता है। यह सचेत भी करता है कि भारत की विश्व प्रदूषक के मानकों की दृष्टि से पहली ही स्थिति अच्छी नहीं है अतः हमें ऐसे कार्य करने से बचना चाहिए जो प्रदूषण में और वृद्धि का कारण बने। हम आतिशबाजी करें, दिये जलाएं, रोशनी करें, अपनी परंपराओं और खुशियों को समुचित रूप से अभिव्यक्त भी करें किंतु हमेशा अति से बचें। कई महानगरों में देखने में आता है कि दीपोत्सव पर जलाए जाने वाले पटाखे प्रदूषण (वायु, ध्वनि, भू) तथा दुर्घटनाओं का बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। अतः **सीमित और सुरक्षित रूप में आतिश-बाजी विशेष कर ग्रीन आतिशबाजी के उपयोग पर सभी को विचार करना चाहिए।**

- डॉ. मनमोहन प्रकाश जी, इंदौर (म. प्र.)

यदि आप भारतीय परम्परा की पत्रिका और वेबसाइट पर विज्ञापन देना चाहते हैं, तो हमसे संपर्क करें।

पत्रिका में आधा पेज और पूरा पेज विज्ञापन उपलब्ध है। वेबसाइट पर 2 प्रकार के बैनर उपलब्ध हैं, जिन्हें 3 स्थानों पर देखा जा सकता है।

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

बाल दिवस

की बधाई

www.bhartiyaparampara.com